Department of Political science
D. B. College, Jaynagar
B.A IIIrd — Pub Ad.

DR. A. K. Yadav
(ASSTT Prof. G.P.T.T.)
Pol. Sc.

Date- 03-10-2020

OLT. Lecture No- 3 And 4

आदेश की एकता
(Unity of command)

आदेश की एकता को संक्षिप्त एवं साफ शब्दों में परिभाषित करते हुए यही कहा जा सकता है कि- "किसी कर्मचारी को किसी एक वरिष्ठ अधिकारी द्वारा ही नेतृत्व दिया जाना चाहिए"। फिफनर, हेनरी फेयोल आदि विद्वानों ने इस सिद्धांत का प्रबल समर्थन किया है। इस सिद्धांत के समर्थकों के अनुसार यदि कोई भी कर्मचारी अपने उच्चतम कर्मचारियों का आदेश ग्रहण करता है तो इस बात की भी सम्भावना रहती है कि उसे विरोधी आदेश प्राप्त हो और वह कठिन स्थिति में पड़ जाए। आदेशों की विविधता या अनेकता का यह परिणाम भी हो सकता है कि अधीनस्थ कर्मचारी अपने उच्च अधिकारियों को आपस में संघर्ष उत्पन्न करने की चेष्टा करें। इससे भ्रम भी उत्पन्न हो सकता है तथा उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करना भी कठिन हो सकता है। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए संगठन में आदेश की एकता के सिद्धांत पर बल दिया जाता है।

हेनरी फेयोल ने संगठन के आदेश की एकता के सिद्धांत की परिभाषा दी है — "संगठन में एक कर्मचारी को केवल एक ही वरिष्ठ अधिकारी से आदेश प्राप्त करना चाहिए। इस नियम की अवहेलना करने से सत्ता एवं संगठन कमजोर हो जाता है। अनुशासन खतरे में पड़ जाता है, व्यवस्था गड़बड़ा जाती है और स्थायित्व भी संकट में पड़ जाता है।"

फिफनर तथा प्रेस्थस के अनुसार — "आदेश की एकता से यह आशय है कि किसी संगठन का प्रत्येक सदस्य एक और केवल एक वरिष्ठ अधिकारी के प्रति ही जवाबदेह होगा।"

आदेश की एकता के गुण (merits of unity of command)

(1) आदेश की एकता से सत्ता या संगठन से सम्बद्ध रेखा का स्पष्टीकरण होता है तथा कर्मचारी के सामने आदेश में एकरूपता एवं

Scanned with CamScanner

स्पष्टता होती है। जिससे प्रशासन या संगठन में संलग्न व्यक्ति सही ढंग से अपने कार्यों एवं उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर पाता है।

(2) आदेश की एकता से कार्य व आदेश का उत्तरदायित्व सुनिश्चित हो जाता है। आदेश की एकता सिद्धांत के मुताबिक संगठन के सर्वोच्च पद पर एक व्यक्ति, एक स्वामी (one Person, one boss) की पद्धति लागू होती है। जिससे अनावश्यक भ्रम की सम्भावना समाप्त हो जाती है। यह तो पहले ही स्पष्ट है कि तमाम संगठन सोपानीय पद्धति पर आधारित होते हैं।

(3) आदेश की एकता से इस बात की भी सम्भावना समाप्त हो जाती है कि अनेक विरोधी आदेशों का लाभ उठाकर कर्मचारी व अधिकारियों के बीच मतभेद पैदा करेगा।

आदेश की एकता की आलोचनाएँ — इस सिद्धांत की अनेक आलोचनाएँ की जाती हैं — जिन्हें निम्न रूप में रखा जा सकता है —

(1) आदेश की एकता को सार्वभौमिक रूप में लागू करना कठिन है। उदाहरण के तौर पर जिला स्तर पर सर्वोच्च पदाधिकारी जिलाधिश है। जिसके आदेशों का पालन सोपानीय व्यवस्था के आधार पर आवश्यक है लेकिन कभी-कभी जिला के अन्तर्गत रहने वाले अन्य विभागों का अलग आदेश होता है। स्पष्ट आदेश की एकता में लोचता लानी पड़ती है।

(2) एफ० डब्ल्यू टेलर ने इस सिद्धांत की आलोचना करते हुए लिखा है कि इससे "सैनिक प्रकार की योद्धा पद्धति" का विकास होता है।

(3) आदेश की एकता की आलोचना का एक अन्य आधार इसके परम्परागत स्वरूप को लेकर भी है। आज की तारीख में सहायक अभिकरणों का महत्व बढ़ गया है और कार्य की प्रकृति तकनीकी हो गयी है। ऐसी स्थिति में जरूरी नहीं है कि उच्चस्थ पदाधिकारी सभी बातें जानकारी ही हो। इसलिए आदेश की एकता का महत्व कम हो गया है।

(4) आदेश की एकता के कारण संगठन में उच्च पदाधिकारी अक्षम व अयोग्य होने के बाद भी सर्वाधिक प्रभावशाली होते हैं। जिनके गलत आदेशों को मानना निम्न पदाधिकारियों के लिए आवश्यक होता है। भले ही निम्न-पदाधिकारी योग्य हो। ऐसी स्थिति में कार्य उत्पादन प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है।

Scanned with CamScanner